17 फसलों के त्योहार

सारा दिन बोरसी के आगे बैठकर हाथ तापते हुए गुजर जाता है। कहाँ तो खिचड़ी के समय धूप में गरमाहट की शुरुआत होनी चाहिए और यहाँ हम सूरज के इंतजार में आस लगाए बैठे हुए हैं। पूरे दस दिन हो गए सूरज लापता है। आज सुबह तो रजाई से निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

बाहर देखने से तो समय का अंदाज बिल्कुल नहीं हो रहा लेकिन घर में हो रही चहल-पहल अब पता चल रही है। रह-रहकर कानों में कभी चापाकल के चलने और पानी के गिरने की आवाज तो कभी किसी के हाँक लगाने की आवाज आ रही थी, ''जा भाग के देख, केरा के पत्ता आइल कि ना?''

''आज ई लोग के उठे के नईखे का? बोलऽ, जल्दी तैयार होखस।''

अब तो उठने में ही भलाई है।

नहा-धोकर हम सभी एक कमरे में इकट्ठा हुए। दादा और चाचा ने क्या सफेद चकाचक माड़ लगी धोती और कुर्ता पहने हुए हैं! ''खिचड़ी में अइसन जाड़ हम पहिले कब्बो ना देखनी, देह कनकना देता!'' पापा ने कहा। शायद आज धोती में उन्हें ठंड कुछ ज्यादा लग रही है।

सामने मचिया पर खादी की सफेद साड़ी पहने हुए दादी बैठी थीं। आज दादी ने अपने बाल धोए हैं- झक सफेद सेमल की रूई जैसे हल्के-फुलके बाल। गौर से देखने पर भी एक काला बाल नजर नहीं आता। बिल्कुल धुली-धुली सी लग रही हैं दादी। उनके सामने केले के कुछ पत्ते कतार में रखे हैं जिस पर तिल, मीठा (गुड़), चावल आदि के छोटे-छोटे ढेर पड़े हुए हैं। हमें बारी-बारी से उन सभी चीजों को छूने और प्रणाम करने के लिए कहा गया। जब सबने ऐसा कर लिया तो उन सभी चीजों को एक जगह इकट्ठा करके दान दे दिया गया।

आज तो अप्पी दिदिया बुरी फँसी। उन्हें न तो चूड़ा-दही ही पसंद है और न ही

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

खिचड़ी, पर आज तो फरमाइशी नाश्ता नहीं चलेगा। उन्हें दोनों ही चीजें खानी पड़ेंगी... आज खिचड़ी जो है! खिचड़ी खाने के बाद सभी ने 'गया' से आए तिल, गुड़ और चीनी के तिलकुट को बड़े चाव से खाया। खाते-खाते मैं सोच रही थी कि कितनी अलग है न यह खिचड़ी जो अभी हम मना रहे हैं। स्कूल में हम जो खिचड़ी बनाते थे उसकी अलग ही मस्ती हुआ करती थी। छुट्टी का दिन, नाव में बैठकर गंगा नदी की सैर और फिर टापू पर बालू में दौड़ते हुए पतंग उड़ाना या उड़ाने की कोशिश करना। कितना मजा आता था। इधर हम पतंग उड़ाते थे और वहीं थोड़ी दूर पर गुरुजी, विमला, चित्रा, आनंदजी, झिलमिट भैया सब मिलकर ईंट से बने चूल्हे पर बड़े-बड़े कड़ाहों में खिचड़ी बनाते थे। हम भी बीच-बीच में अपनी पतंगों को सुस्ताने का मौका देते हुए मटर और प्याज छीलने बैठ जाते। वैसी खिचड़ी फिर दुबारा खाने को नहीं मिली। वाकई, ढंग कैसा भी हो, पर है ये खुशियों का त्योहार!

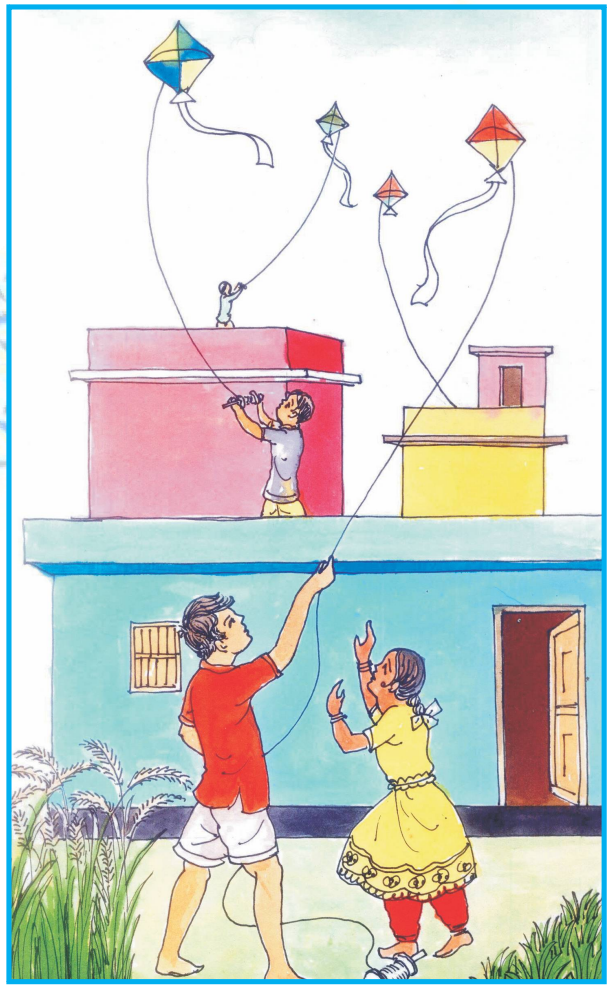

जनवरी माह के मध्य में भारत के लगभग सभी प्रांतों में फसलों से जुड़ा कोई-न-कोई त्योहार मनाया जाता है। कोई फसलों के तैयार हो जाने पर खुशी बाँटता है तो कुछ लोग इस उम्मीद में खुश होते हैं कि अब पाला कम होगा, सूरज की गर्मी बढ़ने से खेतों में खड़ी फसल तेजी से बढ़ेगी। सभी प्रांतों और इलाकों का अपना रंग और ढंग नजर आता है। इस दिन सब लोग

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

अच्छी पैदावार की उम्मीद और फसलों के घर में आने की खुशी का इजहार करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश में मकर-संक्रांति या तिल-संक्रांति, असम में बीहू, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब में लोहड़ी, झारखंड में सरहुल, गुजरात में पतंग का पर्व सभी खेती और फसलों से जुड़े त्योहार हैं। इन्हें जनवरी से मध्य अप्रैल तक अलग-अलग समय मनाया जाता है।

झारखंड में सरहुल बड़े जोशो-खरोश के साथ मनाया जाता है। चार दिनों तक इसका जश्न चलता रहता है।

अलग-अलग जनजातियाँ इसे अलग-अलग समय में मनाती हैं। संथाल लोग फरवरी-मार्च में, तो ऊराँव लोग इसे मार्च-अप्रैल में मनाते हैं। आदिवासी आमतौर पर प्रकृति की पूजा करते हैं। सरहुल के दिन विशेष रूप से 'साल' के पेड़ की पूजा की जाती है। यही समय है जब साल के पेड़ों में फूल आने लगते हैं और मौसम बहुत ही खुशनुमा हो जाता है। स्त्री-पुरुष दोनों ही ढोल-मंजीरे लेकर रात भर नाचते-गाते हैं। चारों ओर फैली हुई छोटी-छोटी घाटियाँ, लंबे-लंबे साल के वृक्षों का जंगल और वहीं आस-पास बसे छोटे-छोटे गाँव। लिपे-पुते, करीने से बुहारे और सजाए गए अपने घरों के सामने लोग एक पंक्ति में कमर में बाँहें डालकर नृत्य करते हैं। अगले दिन वे नृत्य करते हुए घर-घर जाते हैं और फूलों के पौधे लगाते हैं। घर-घर से चंदा माँगने की भी प्रथा है। पर चंदे में मालूम है क्या माँगते हैं? मुर्गा, चावल और मिश्री। फिर चलता है खाने-पीने और खेलों का दौर। तीसरे दिन जाकर पूजा होती है जिसके बाद लोग अपने कानों में सरई का फूल पहनते हैं।

इसी दिन से बसंत ऋतु की शुरुआत मानी जाती है। धान की भी पूजा होती है। पूजा किया हुआ आशीर्वादी धान अगली फसल में बोया जाता है।

तमिलनाडु में मकर-संक्रांति या फसलों से जुड़ा त्योहार 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन खरीफ की फसलें चावल, अरहर, मसूर आदि कटकर घरों में पहुँचती हैं और लोग नए धान कूटकर चावल निकालते हैं। हर घर में मिट्टी का नया मटका लाया जाता है जिसमें नए चावल, दूध और गुड़ डालकर उसे पकाने के लिए धूप में रख देते हैं। हल्दी शुभ मानी जाती है

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

इसलिए साबुत हल्दी को मटके के मुँह के चारों ओर बाँध देते हैं। यह मटका दिन में साढ़े दस-बारह बजे तक धूप में रखा जाता है। जैसे ही दूध में उफान आता है और दूध-चावल मटके से बाहर गिरने लगता है तो ''पोंगल-पोंगल, पोंगला-पोंगल'' के स्वर सुनाई देते हैं।

दूसरी ओर, गुजरात में पतंगों के बिना तो मकर-संक्रांति का जश्न अधूरा ही माना जाएगा। इस दिन आसमान की ओर यदि नजर उठाएँ तो शायद हर आकार और रंग-रूप की पतंगें आकाश में लहराती हुई मिलेगी। प्रत्येक गुजराती चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या आयु का हो, पतंग उड़ाता है। हजारों-लाखों पतंगों से सूर्य भी ढँक-सा जाता है।

कुमाऊँ में मकर-संक्रांति को घुघुतिया भी कहते हैं। इस दिन आटे और गुड़ को गूंध कर पकवान बनाए जाते हैं। इन पकवानों को तरह-तरह के आकार दिए जाते हैं जैसे-डमरू, तलवार, दाड़िम का फूल आदि। पकवान को तलने के बाद एक माला में पिरोया जाता है। माला के बीच में संतरा और गन्ने की गंडेरी (गन्ना का टुकड़ा) पिरोई जाती है। यह काम बच्चे बहुत रुचि और उत्साह के साथ करते हैं। सुबह बच्चों को माला दी जाती है। बहुत ठंड के कारण पक्षी पहाड़ों से चले जाते हैं। उन्हें बुलाने के लिए बच्चे इस माला से पकवान तोड़-तोड़कर पक्षियों को खिलाते हैं और गाते हैं-

कौआ आओ।
घुघूत आओ।
ले कौआ बड़ौ,
म कै दे जा सोने का घड़ौ।
खा लै पूरी,
म कै दे जा सोने की चूड़ी।

इसके साथ ही जिस चीज की कामना हो, वह माँगते हैं।

हैं न कितने अलग-अलग अंदाज मकर-संक्रांति मनाने के। कहीं दूध, चावल और गुड़ की खीर बनती है तो कोई पाँच प्रकार के नए अनाज की खिचड़ी बनाता है। कहीं-कहीं लोगों का सैलाब नदी में स्नान के लिए उमड़ पड़ता है। लोग ठंड से ठिठुरते रहेंगे, पर बर्फीले पानी में

© RSTBC NOT TO BE PUBLISHED

कम-से-कम एक डुबकी तो जरूर लगाएँगे। हाल यह होता है कि इन जगहों पर तिल रखने की भी जगह नहीं होती। तिल से याद आया मकर-संक्रांति के दिन पानी में तिल डालकर स्नान करना, तिल दान करना, आग में तिल डालना, तिल के पकवान बनाना विशेष महत्व रखता है। तुम्हारे घर या इलाके में इस त्योहार को कैसे मनाया जाता है? इसे खिचड़ी, पोंगल, मकर-संक्रांति या कुछ और कहा जाता है? या आप फसलों से जुड़े कोई और त्योहार मनाते हैं? यदि आप आपस में बात करें तो आपको यह जानकर हैरानी होगी कि कई बार एक ही इलाके में रहने वाले लोग भी इस त्योहार को अलग-अलग ढंग से मनाते हैं।

शब्दार्थ

फरमाइशी - जो माँग के अनुसार किया गया हो। **कोशिश** - प्रयत्न, प्रयास
करीना - अंदाज **जश्न** - समारोह, महोत्सव
अंदाज - शैली, पद्धति

प्रश्न अभ्यास

पाठ से-

1. ''अप्पी दिदिया बुरी फँसी।'' कैसे?
2. संथाल के लोग सरहुल कब और कैसे मनाते हैं?
3. आपके यहाँ फसलों के त्योहार को किस नाम से जाना जाता है और कैसे मनाया जाता है?
4. मकर संक्रांति के दिन तिल को किस रूप में प्रयोग करते हैं?

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

5. स्तंभ 'क' में त्योहारों के नाम दिए गए हैं, जिसे स्तंभ 'ख' में दिए गए राज्यों के नाम से मिलान कीजिए-

क	ख
बीहू	पंजाब
पोंगल	झारखण्ड
ओणम	असम
मकर-संक्रांति	केरल
लोहरी	गुजरात
सरहुल	बिहार
पतंग पर्व	तमिलनाडु

6. निम्नलिखित वाक्यों के आगे कोष्ठक में सही (√) या गलत (X) का निशान लगाइए ।

(क) तिलकुट गया से आया था। ( )

(ख) भारत में फसलों का त्योहार अप्रैल के मध्य में मनाया जाता है। ( )

(ग) सरहुल का जश्न चार दिनों तक चलता है। ( )

(घ) पोंगल पर्व में 'साल' के पेड़ की पूजा की जाती है। ( )

पाठ से आगे-

1. इसके अतिरिक्त आपको कौन-सा त्योहार/पर्व अच्छा लगता है? उसे आप कैसे मनाते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

2. हिन्दी महीनों के नाम लिखिए तथा उस महीने में मनाये जाने वाले पर्वों का उल्लेख कीजिए।

उदाहरण : चैत्र - रामनवमी

3. निम्नांकित पंक्तियाँ भोजपुरी भाषा में लिखी गई हैं। इन पंक्तियों को आप अपनी मातृभाषा में लिखिए।

(क) ''आज ई लोग के उठे के नईखे का? बोलऽ जल्दी तैयार होखस।''

(ख) ''जा भाग के देख, केरा के पत्ता आइल कि ना?''

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

व्याकरण-

1. **नीचे दिए गए शब्दों की ध्वनि के आधार पर तीन-तीन शब्द लिखिए-**

भाग्यशाली शक्तिशाली समृद्धशाली

बुराई

गाड़ीवान

पाठशाला

मचिया

2. **इन शब्द समूहों को वाक्य से स्पष्ट कीजिए-**

तिल - तिल जलना .....

तिल रखने की जगह .....

तिल का ताड़ करना .....

तिलमिलाना .....

तिल दान करना .....

कुछ करने को-

1. आपके यहाँ किन-किन त्योहारों/अवसरों पर किस-किस तरह के गीत गाये जाते हैं? कोई गीत कक्षा में सुनाइए ।

●●●

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED